टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मार्च 2024 वर्ष 28, अंक 3 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2080 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 200वाँ जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव सम्पन्न

धन्य है गुजरात की भूमि जिसने अनेकों महापुरुषों को जन्म दिया है उनमें मुख्य स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी एवं सरदार बल्लभभाई पटेल है। -माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू

मेरा सौभाग्य है कि स्वामी जी की जन्म भूमि गुजरात में मुझे जन्म मिला - प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महर्षि दयानंद जी का जन्मोत्सव 10, 11, 12 फरवरी 2024 को ऋषि जन्म भूमि टंकारा में समारोह पूर्वक डी ए वी कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, महर्षि दयानंद सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। शनिवार 10 फरवरी को प्रात: 9:00 बजे से 9:30 बजे तक महर्षि दयानन्द जन्म गृह टंकारा में यज्ञ का आयोजन किया गया तदुपरान्त जन्मस्थली से कार्यक्रम स्थल तक विशाल शोभायात्रा प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम स्थल पर यज्ञाग्नि स्थापना एवं यज्ञ का आयोजन किया गया और गुजरात राज्य के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी के करकमलों द्वारा धवजारोहण का कार्यक्रम किया गया। मंच पर मंत्र पाठ एवं सन्यासी महानुभावों का अभिनंदन किया गया। उद्‌घाटन सत्र के मुख्य अतिथि गुजरात प्रान्त के राज्यपाल महामहिम आचार्च देवव्रत जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवराज जी का भावपूर्ण प्रवचन हुआ और विभिन्न महानुभावों द्वारा महर्षि दयानंद स्मरण प्रवचन दिए गए। तदुपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। महर्षि दयानंद स्मरण सत्र में विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया मुख्य मंच पर संगीत का भी आयोजन किया गया आर्यवीर दल के द्वारा आर्य वीर दल व्यायाम एवं शौर्य प्रदर्शन किया गया। मुख्यमंच पर मातृशक्ति द्वारा महर्षि दयानंद का गुणगान किया गया। इसके साथ ही सांस्कृतिक मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई और मुख्य पंडाल में भजन संध्या एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अनेकों विद्वानों ने अपनी वाणी से महर्षि जी का गुणगान किया।

रविवार 11 फरवरी को प्रात: 8:30 बजे यज्ञ का आयोजन किया गया तदुपरांत भजन प्रवचन ध्यान स्मरण आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

मानव जाति के उत्प्रेरक "महर्षि दयानंद सरस्वती-सत्र" में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने वर्चुअल व्याख्यान देते हुए कहा कि मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जी की जन्म भूमि टंकारा पहुंचता परंतु मैं मन से और हृदय से आप सबके बीच में हूं। मुझे खुशी है कि स्वामी जी के योगदानों को याद करने के लिए आर्य समाज यह महोत्सव मना रहा है। मुझे पिछले वर्ष इस शुभ अवसर पर भाग लेने का अवसर मिला था। मुझे विश्वास है कि यह आयोजन हमारी नई पीढ़ी को महर्षि दयानन्द के जीवन से परिचित कराने का प्रभावी माध्यम बनेगा। मेरा सौभाग्य है कि स्वामी जी की जन्म भूमि में गुजरात में मुझे जन्म मिला। उनकी कर्मभूमि हरियाणा में मुझे कार्य करने का अवसर मिला। इसलिए स्वाभाविक रूप से मेरे जीवन में उनका एक अलग प्रभाव है। मैं आज इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जी के चरणों में प्रणाम

करता हूं। देश विदेश में रहने वाले उनके करोड़ों अनुयायियों को जन्म जयन्ती की बहुत बहुत बधाई देता हूं। आज से 200 वर्ष पूर्व स्वामी जी का जन्म एक अभूतपूर्व पल था। यह वह दौर था जब गुलामी में फसें भारत के लोग अपनी चेतना खो रहे थे। स्वामी दयानन्द जी ने तब देश को बताया कि कैसे हमारी रूढ़ियों एवं अन्धविश्वास ने देश को जकड़ा हुआ है। इन रूढ़ियों ने हमारे वैज्ञानिक चिन्तन को कमजोर कर दिया था। इन सामाजिक बुराईयों ने हमारी एकता पर प्रहार किया था। समाज का एक वर्ग भारतीय संस्कृति और आध्यात्म से लगातार दूर जा रहा था। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द जी ने "वेदों की ओर लौटो" का आह्वान किया। उन्होंने वेदों पर भाष्य लिखे। तार्किक व्याख्या की। उन्होंने रूढ़ियों पर खुलकर प्रहार किया और बताया कि भारतीय दर्शन का स्वरूप क्या है।

इसका परिणाम यह हुआ कि समाज में विश्वास लौटने लगा। लोग वैदिक धर्म को जानने लगे और उसकी जड़ों से जुड़ने लगे। हमारी सामाजिक कुरीतियों को मोहरा बनाकर अंग्रेजी हुकुमत हमें नीचा दिखाने की कोशिश कर रही थी। समाजिक बदलाव का हवाला देकर तब कुछ लोगों द्वारा अंग्रजी राज को सही ठहराया जाता था। ऐसे काल में स्वामी दयानन्द जी के पदार्पण से सब साजिशों को गहरा धक्का लगा। लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल स्वामी श्रद्धानन्द क्रान्तिकारियों की पूरी श्रंखला तैयार हुई जो आर्य समाज से प्रभावित थी इसलिए स्वामी दयानन्द जी केवल एक वैदिक ऋषि ही नहीं थे एक राष्ट्रीय चेतना के ऋषि भी थे। स्वामी दयानन्द जी के जन्म का यह 200वां वर्ष का पड़ाव उस समय आया है जब भारत अपने अमृतकाल के प्रारम्भिक वर्षो में है। स्वामी दयानन्द जी भारत के उज्जवल भविष्य का सपना देखने वाले सन्त हुए। स्वामी जी के मन में जो विश्वास था अमृतकाल में हमें उसी विश्वास को अपने आत्म विश्वास में बदलना होगा।

स्वामी दयानन्द आधुनिकता के पेरोकार थे। मार्गदर्शक थे। उनसे प्रेरणा लेते हुए हम सभी को इस अमृतकाल में भारत को आधुनिकता की तरफ ले जाना है। हमारे भारत को विकसित भारत बनाना है। आज आर्य समाज के देश और दुनिया में ढाई हजार से अधिक स्कूल हैं। कालेज

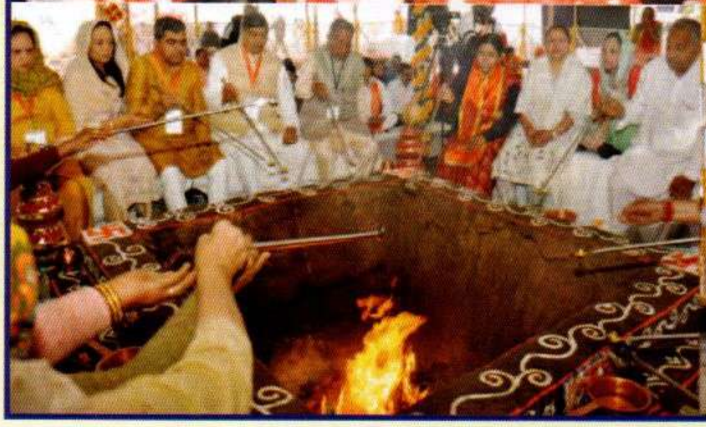

और यूनिवर्सिटी हैं। आप सभी 400 से अधिक गुरूकूलों में विद्यार्थियों को शिक्षित प्रशिक्षित कर रहे हैं। मैं चाहूंगा कि आर्य समाज 21वीं सदी के इस दशक में एक नई उर्जा के साथ राष्ट्र निर्माण के अभियानों की जिम्मेदारी उठाये। डी.ए.वी संस्थान महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की जाती जागती स्मृति है, प्रेरणा हैं। हम उनको निरन्तर सशक्त करेंगे। यह महर्षि दयानन्द जी को हमारी पुण्य श्रद्धांजलि होगी। भारतीय चरित्र से जुड़ी शिक्षा व्यवस्था आज की बड़ी जरूरत है। आर्य समाज के विद्यालय इसके बड़े केन्द्र रहे हैं। राष्ट्रीय् शिक्षा नीति के जरिये देश अब इसे विस्तार दे रहा है। हमारा प्रयास कि हम समाज को जोड़े यह हमारी जिम्मेदारी है।

आज चाहे लोकल के लिए वोकल का विषय हो। आत्म निर्भर भारत अभियान हो। पर्यावरण के लिए देश के प्रयास हों। ऐसे अनेक अभियान आज की आधुनिक जीवन शैली में प्रकृति के लिए न्याय सुनिश्चित करने वाला मिष्ठान हैं। आर्य समाज के शिक्षा संस्थान इनमें पढ़ने वाले विद्यार्थी सब मिलकर एक बड़ी शक्ति हैं। ये सब बहुत बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। आपके संस्थानों में जो विद्यार्थी हैं उनमें बड़ी संख्या ऐसी है जो 18 वर्ष पार कर चुके है। उनका नाम वोटर लिस्ट में है, वे मतदान का महत्व समझें ।

इस वर्ष से आर्य समाज की स्थापना का 150वॉं वर्ष आरम्भ होने जा रहा है। मैं चाहूंगा कि हम सब इतने बड़े अवसर को अपने प्रयासों, अपनी उपलब्धियों से सचमुच में यादगार बनायें। प्राकृतिक खेती ऐसा विषय है जो सभी विद्यार्थियों को समझना जानना जरूरी है। हमारे आचार्य देवव्रत जी इस दिशा में बहुत मेहनत कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द जी के जन्म क्षेत्र में प्राकृतिक खेती का सन्देश पूरे देश के किसानों को मिले इससे बेहतर और क्या होगा। महर्षि दयानन्द ने अपने दौर में महिलाओं के अधिकारों और उनकी भागीदारी की बात की थी। नई नीतियों के

जरिये देश आज अपनी बेटियों को आगे बढ़ा रहा हैं। कुछ महीने पहले देश ने नारी शक्ति वन्दन अधिनियम पास करके लोक सभा और विधान सभा में महिला आरक्षण सुनिश्चित किया है। देश के इन प्रयासों से जन जन को जोड़ना यह आज महर्षि को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इन सभी कार्यों के लिए आपके पास भारत सरकार के नवगठित युवा संगठन की शक्ति भी है। देश के सबसे बड़े इस संगठन का नाम मेरा युवा भारत है। दयानन्द सरस्वती जी के सभी अनुयायियों और डी.ए.वी संस्थानों से मेरा आग्रह है कि कि मेरा युवा भारत से जुड़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। इसी के साथ मैं महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर पुनः शुभकामनायें देता हैं। एक बार पुनः महर्षि दयानन्द जी को आप सभी को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम करता हूं।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने अपना सारगर्भित प्रवचन दिया जो कि समस्त आर्य जनों को झकझोड़ने वाला था। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे माननीय श्री पुरुषोत्तम रूपाला जी केंद्रीय मंत्री भारत सरकार ने स्वामी जी के प्रति अपने भावभीनी श्रद्धांजलि प्रकट की। तदुपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम में ''महर्षि दयानन्द के कार्य- हमारी जिम्मेदारी'' की प्रस्तुति की गई। संस्कृत कार्यक्रम एवं गीत विभिन्न विद्वानों एवं कवियों द्वारा प्रस्तुत किए गए और आर्य समाज द्वारा महर्षि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पधारे योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने अपना सारगर्भित प्रवचन दिया।

5:30 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसका जिसका विषय था ''अंधविश्वास एक गहरी खाई''। 7:00 बजे 1100 यज्ञिको द्वारा यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभी याज्ञिक इस प्रकार बैठे थे जैसे लिखा हो ''200 वां जन्मदिवस''। विश्व के

समस्त आर्यों द्वारा एक सामूहिक स्मरण एवं संकल्प सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। डी.ए.वी स्कूलों के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा एक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई जिसकी सभी पधारे आर्य जनों नें प्रशंसा की।

सोमवार 12 फरवरी को प्रात: 8:30 बजे से 200वीं जयंती महायज्ञ का आयोजन किया गया तदुपरान्त स्वामी जी के प्रति स्मरण एवं संकल्प समारोह गीतों की प्रस्तुति की गई। एक वीडियो प्रस्तुति का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक था ''महर्षि दयानंद की विश्व को महान देन''। प्रात: 10:30 बजे महर्षि दयानन्द जी के प्रति वरिष्ठ आर्य जनों द्वारा भावांजलि प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर भारत की राष्ट्रपति डॉक्टर श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारीं, उनके पधारने पर स्वागत गीत एवं वेद मन्त्रों के उच्चारण से उनका स्वागत किया गया माननीय राष्ट्रपति जी को आचार्य देवव्रत जी राज्यपाल गुजरात सरकार, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र भाई पटेल, केंद्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला जी एवं डी.ए.वी के प्रधान डॉ पूनम सूरी ने स्मृति चिन्ह के रूप में यज्ञाग्नि, वेदों का सेट एवं स्वामी दयानंद जी का चित्र भेंट किया।

इसी अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा ज्ञान ज्योति तीर्थ का शिलान्यास वर्चुअल किया गया। भारत के राष्ट्रपति माननीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, गुजरात के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी, गुजरात के मुख्यमंत्री माननीय श्री भूपेंद्र भाई पटेल आदि ने महर्षि दयानंद के प्रति अपनी भावांजलि प्रकट की। माननीय राष्ट्रपति जी ने समस्त आर्य संस्थाओं द्वारा आयोजित महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जन्म दिवस की सराहना करते हुए कहा कि धन्य है गुजरात की भूमि जिसने अनेकों महापुरुषों को जन्म दिया है उनमें मुख्य स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी एवं सरदार

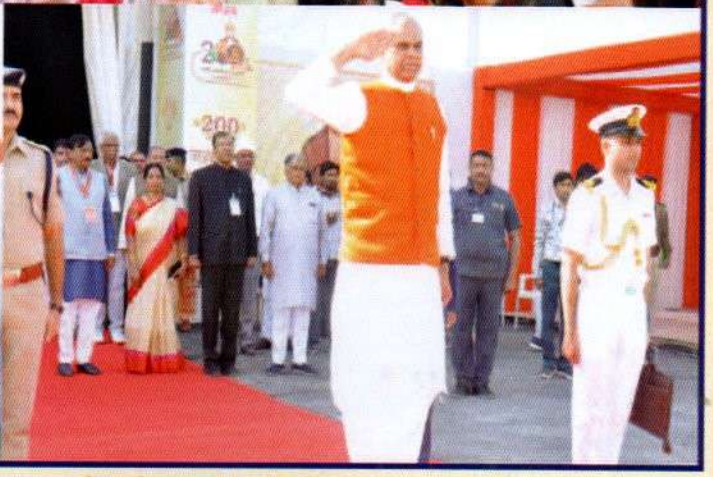

बल्लभभाई पटेल है। स्वामी जी ने अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना कर देश के समस्त आर्यो को अपना मार्गदर्शन दिया ।

महर्षि दयानंद सरस्वती संस्कृत के विद्वान थे उन्होंने जब देखा की लोगों को संस्कृत समझने में कठिनाई हो रही है तो लोगों को समझाने के लिए हिन्दी भाषा में अपने व्याख्यान दिए जो की समस्त आर्यो के लिए प्रेरणादाई थे। उनके इस प्रयास से हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला। स्वामी जी ने अंधविश्वास एवं तत्कालीन रूढ़ीवादी त्रुटियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने बाल विवाह एवं बहु विवाह का कड़ा विरोध किया नारी शिक्षा एवं नारी सम्मान के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किया। उसी का परिणाम है कि आज नारी को शिक्षा एवं सम्मान मिल रहा है और भारत की नारी नई-नई उपलब्धियां प्राप्त कर रही है इसी के साथ में उन्हें महर्षि दयानंद जी को नमन करते हुए आर्यो द्वारा किए गए इस महानतम कार्य की सराहना करती हूं।

दोपहर 2:00 बजे से निरंतर भजन संध्या का आयोजन किया गया और कार्यकर्ताओं का परिचय एवं आवास व्यक्त किया गया उसे कार्यक्रम में विशेष आकर्षण के केंद्र रहे बच्चों के लिए कीड़ा स्थल, मूवी हॉल, विशेष प्रदर्शनी, शानदार रंगोली, युवाओं का विशेष व्यायाम प्रदर्शन, भव्य आकर्षक बाजार एवं जीवन उपयोगी साहित्य विक्रय व्यवस्था, देश से पधारे मूर्धन्य सन्यासी विद्वानों के प्रेरक प्रवचन और भी बहुत कुछ।

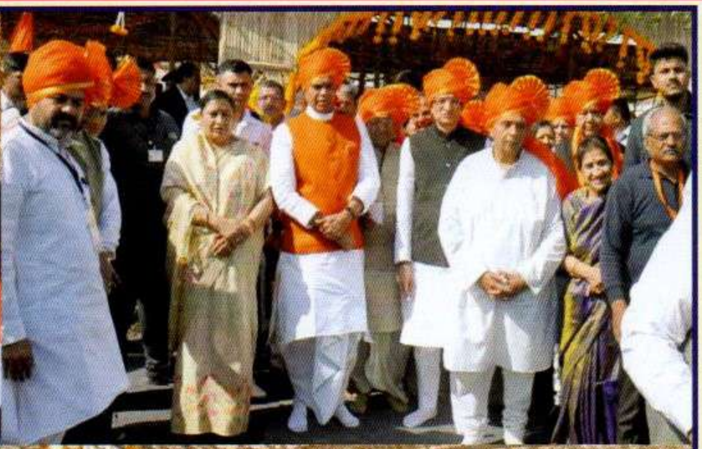

વેદાંત:

वेद અને अंत શબ્દ થી વેદાંત શબ્દ બને છે. સરળ ભાષામાં એનો અર્થ વેદોનો અંત ભાગ અથવા તો વેદોનો નિષ્કર્ષ. ઉપનિષદો વેદોના સાર છે. વેદાંત ઉપનિષદોમાં. ખાસ કરીને જ્ઞાન અને મુક્તિમાં સૂચિત અટકળો અને દર્શનમાંથી ઉદભવેલા. અથવા તેની સાથે ગોઠવાયેલા વિચારોની ઓળખ આપે છે. આનાથી વધુ સરળ ભાષામાં કહીએ તો વેદાંતનો અર્થ વૈદિક વિદ્વતા(wisdom) ની પરાકાષ્ઠા અથવા આપણી આધ્યાત્મિક યાત્રા પરનું અંતિમ પગલું છે.

વેદોના પ્રખર અભ્યાસ કર્યા પછી વેદોના અંત(ઉપનિષદ) ભાગની સમજ લેવા તૈયાર થઇ શકાય। ઉપનિષદમાં હિન્દૂ ધર્મ નું ગહન દર્શન(deepest philosophy) રહેલી છે. ચાર મુખ્ય વેદ ધર્મ વિશેની સમાજ આપે છે. ધર્મ નો અર્થ અહીં મૂલ્યો. નૈતિકતા. સિદ્ધાંત. ઉપાસના. ધ્યાન. પ્રાર્થના. ધાર્મિક વિધિઓ તરીકે લેવામાં આવે છે. ત્યાર બાદ પ્રશ્ન ઉભો થાય છે "હું કોણ છું?". અને આ પ્રશ્ન નો જવાબ વેદાંત - ઉપનિષદમાં છુપાયેલો છે.

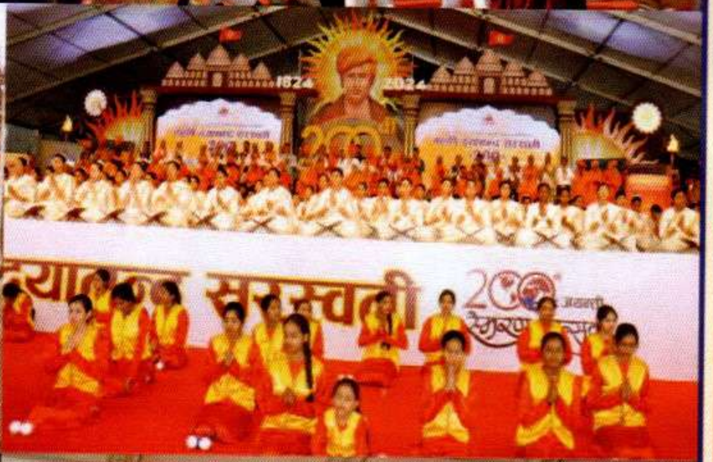
1824
2024

टंकारा, गुजरात में जन्मे निराले महापुरुष, आर्यसमाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

1824

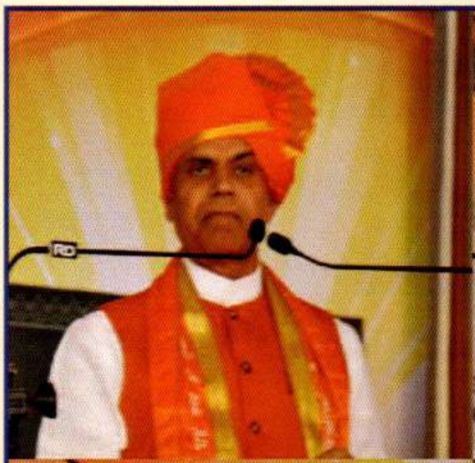

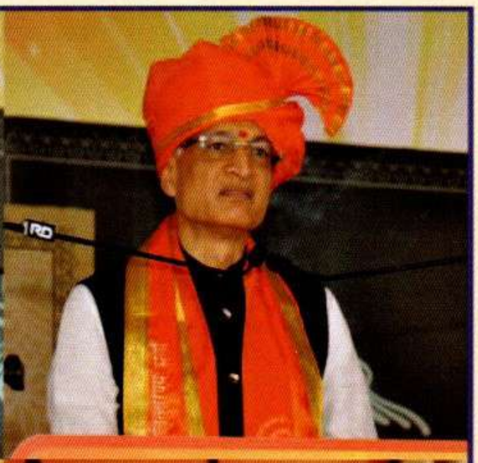

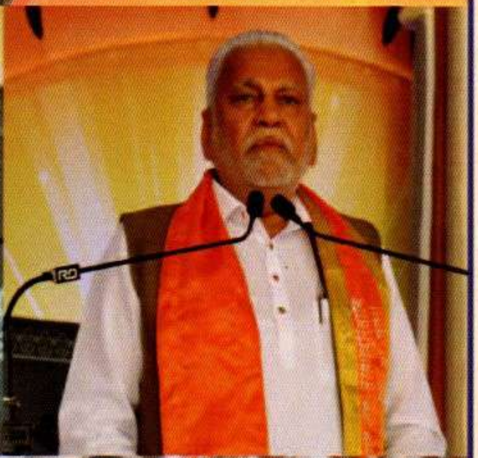

ओ३म्

ओ३म्

1824
2024

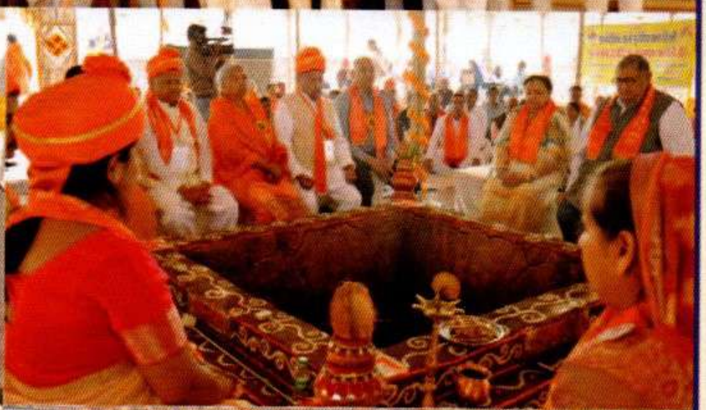

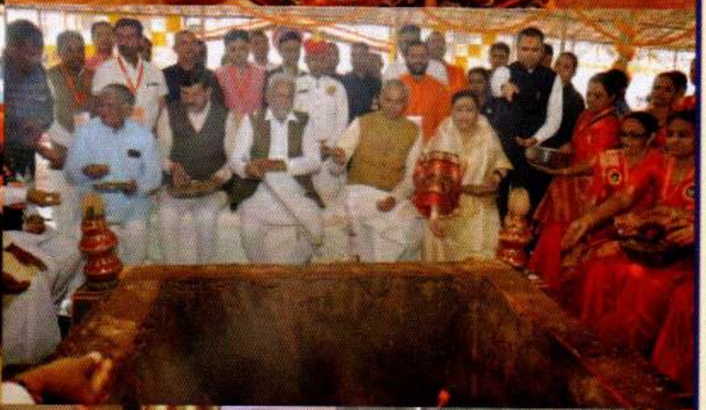

आवश्यक सूचना

आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र "टंकारा समाचार" इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर 9560688950 पर सदस्य संख्या एवम् नाम सहित भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

- ट्रस्ट मन्त्री एवम् सम्पादक

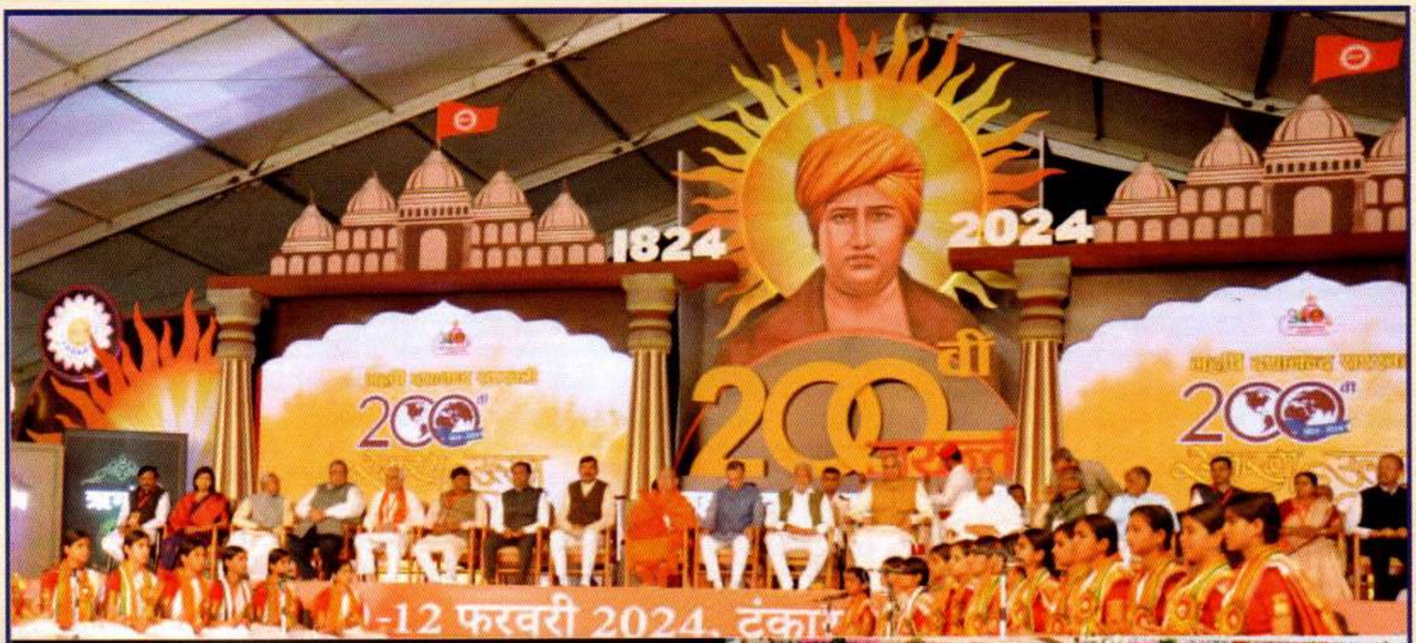
1824
2024

साहित्य
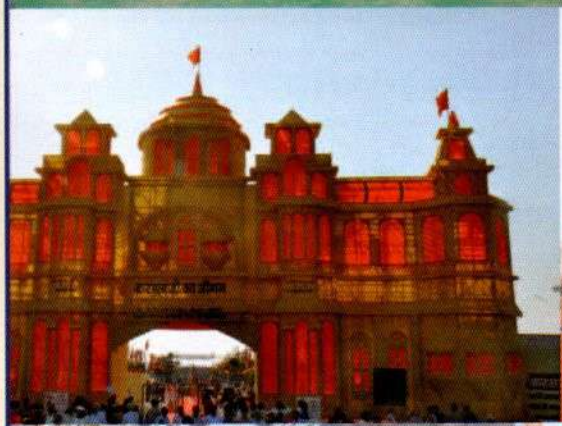

POMEGRANATE

❑ S.R. Mirral

Pomegranate (Punicagranatum) is grown throughout India and in every household. It is small tree with narrowly elliptic or lanceolate leaves, bright red flowers and orange colored funnel-shaped calyx tube. Fruit large, yellowish red when ripe with persistent calyx lobes. Seeds surrounded by edible, succulent pinkish white pulp. It is considered more valuable as a medicine than as a fruit. Growing a tree in garden is like having a pharmacy at doorstep. it has reasonable component of potassium, phosphorus, sulphur, vitamin C, fiber and its alkaline effects, It is specially good for the palpitation of the heart. Sweet sour pomegranate with salt and black pepper is an appetizer. Decoction of the finely ground rind of pomegranate is good for diarrhoea, dysentery, tapeworms, TB, general debility. The rind has great medicinal properties. Other parts of this plant flowers, stem-bark and fruit also have medicinal value.

Fresh fruit juice increases and improves the blood-contents. It overcomes pitta-aggravation. If small amounts of powered cinnamon and cloves are added, the stomachic properties of the juice are greatly enhanced. Dried sour fuit (Anardana) has digestive properties and is widely used in cooking in India and in middle east countres. Flowers of anar are an ingredient of prescriptions for abortion. Ayurvedic as well as Unani systems value this precious plant.

Ailment Prescription

1. Anaemia: Dissolve 1/4 tsp cinnamon and 2 tsp honey in 1 cup Pomegranate juice and drink.

2. Dysentery: 1 tsp finely powdered rind and 1/4 tsp nutmeg mixed with 1 tsp ghee taken once or twice a day.

3. Leucorrhoea: Mix 1 tsp power of rind in a mug of water. Use as a vaginal douche frequently.

4.Infertility: Fine powder of seeds and bark is mixed in equal quantity 1/4 teaspoonful of this mixture in taken along with hot water twice a day for a few weeks.

5. Intestinal worms: Mix 1 tsp root-bark and 4-5 crushed cloves. Make a decoction by boiling in water. Cool and drink.

6. Anaemic condition: Grind 2 or 3 tsp dried seeds and take once or twice along with milk for burning sensation during urination, sexual debility.

7. In passing of blood: 1/2 tsp each powder of dried pomegranate flowers, khuskhus and dried neem leaves, taken twice a day along with milk in bleeding piles, blood dysentery.

8. Urine infection: A drink is made by boilling 5-6 flowers in a cup of water nitrate is mixed with a tea cup milk and sugar to taste.

9. Asthma cough: Mix juice of fresh ginger, pomegranate and honey in equal quantities. Take 1 tea spoon of this mixture once or twice a day.

10. Boils: Fine powder of dried rind is mixed with warm mustard oil and applied.

11. Sores, ulcers, Haemoarr-holds: Apply a smoth paste of the rind on the affected parts.

12. Burns and scalds: Grind pomegranate flowers and apply the paste on affected parts.

13. Fruit juice taken frequently in body prevents pitta-aggravation, heat, dysentery, nausea, fever, headache, diabetes etc.

Courtesy: DAV`s Ayurveda for Holistic Heath

टंकारा समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	: नई दिल्ली
2. प्रकाशन अवधि	: मासिक
3. मुद्रक का नाम	: अजय सहगल
4. क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5. मुद्रक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
6. प्रकाशक का नाम	: अजय सहगल
7. क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8. प्रकाशक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
9. सम्पादक का नाम	: अजय सहगल
क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ

सम्पादक का पता, उन व्यक्यिों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों: आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

मैं अजय सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 1.03.2024

अजय सहगल, प्रकाशक एवम् सम्पादक

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के
एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❑❑❑

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❑❑❑

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं
पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❑❑❑

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❑❑❑

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए
सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❑❑❑

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❑❑❑

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❑❑❑

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा
स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❑❑❑

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 G के अन्तर्गत मान्य है।
एवम् C.S.R. दान प्राप्त करने हेतु पंजीकृत।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

"SILENCE"
is the best answer
for all question &
"SMILING"
is the best reaction
to all situations..

टंकारा समाचार मार्च 2024
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2024-26
Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-03-2024
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.02.2024

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–अजय सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय